आध्यात्म के पुरोधा का महाप्रयाण

प्रथम पुरूष ने जिसे तराशा हो, स्वयं विधाता ने जिसके जीवन में रंग भरे हों, पतित पावन परमात्मा करनकरावनहार ने स्वयं जिसे श्रेष्ठ कर्म करना सिखाया हो, भगवान भाग्य विधाता ब्रह्मा ने स्वयं जिसकी तकदीर का रहनुमा बना हो, ज्ञान सागर ने जिसे पढ़ाया हो, प्यार के सागर स्वयं प्रभु का अपार प्यार जिसे सिंचित करता रहा हो, वरदाता सर्वशक्तिवान का वरदहस्त जिसके सिर पर हो, जिसके विवेक को स्वयं बुद्धेश्वर ने जाग्रत किया हो। जगतनियन्ता नव सृष्टि के रचयिता जिसका खुद गुरू बना हो, आदि पिता प्रजापिता ब्रह्मा एवं जगदम्बा सरस्वती की छत्रछाया में जिसका पवित्रतम् जीवन रहा हो, सारे वेदों शास्त्रों का ज्ञाता, महावीर स्वयं जिसे गाइड कर रहा हो, वह अद्भुत रचना भला कैसी होगी? उसका वर्णन जिसने स्वयं भगवान को अपनी आँखों से सृष्टि को रचते देखा, हर कर्म करते देखा वह अति विशेष ते विशेष, श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ विधाता के अनमोल रत्न थे आदरणीय रमेश भाई जी..................

नवीनता के पर्याय– जिस प्रकार नवयुग रचता नूतन विश्व के सृजन के लिए धरा पर आते हैं उनके इस अविश्वसनीय कार्य में आदरणीय भाई साहब ने पुरानी दुनिया में नये समाज के लिए नित नये प्लैन बना यज्ञ को नये आयाम दिये।कहा जाता है कि समय की गति बहुत ही तीव्र होती है,जिसने समय के साथ चलना सीखा वही समय से आगे निकल सकता है,समाज में रोज कितने ऐसे किस्से सुनने को मिलते हैं कि माँ–बाप पुराने जमाने के और बच्चे नये जमाने के,दोनों का सामांजस्य न होने के कारण दोनों दुखी रहते हैं पर भाई साहब को हमने देखा कि न सिर्फ वह स्वयं को समय के अनुसार अपडेट रखते थे बल्कि सबको भी समय के अनुसार चलना सिखाते थे,हमें याद है कि जब भी वे एकाउन्ट मीटिंग लेते थे,तो साइंस के नवीन साधनों को यूज करने का न सिर्फ प्रोत्साहन देते थे बल्कि पैरोकारी भी करते थे। नये–नये कोर्स कराना किस–किस ने सीखा है ये भी पूँछते थे,अरे नवीनता सीखो,अपने यज्ञ में अभी इतने विंग्स आ गये हैं,इतने नये–नये कोर्स निकले हैं आप लोग वही 60 वर्ष पहले वाला रटा–रटाया क्यों सुनाओ, आगे बढ़ो,समय के इशारे समझो।

यज्ञ में साकार बाबा मुरली में पुराने शिक्षाप्रद फिल्मी गीतों को आधार बना उस पर नया ज्ञान सुनाते थे,तब भाई साहब ने ही बाबा को अपने गीत बनाने का आग्रह कर एवं विचार दिया, तो बाबा ने सहस ही पास कर कहा हमारे पास ऐसे ज्ञान के गीत बनाने वाला बच्चा अभी कोई आया नहीं है,तब भाई साहब ने ही गीत बनाने की शुरूवात की और बसुधा के इस आँचल में.............. गीत बनाया। दादियों की तो स्थिति बोलती थी पर भट्ठी के बाद आने

वालों को तो कोई समझाने का आधार चाहिए था,इसलिए भाई साहब ने ही चित्र प्रदर्शनी का सुझाव बाबा के सामने रखा और फिर बनाई भी और बड़े भभके से लगवाई भी,दिन में तो प्रदर्शनी से सेवाओं का इतिहास शुरू हो गया, पर रात्रि में सेवाओं का जब संकल्प आया तो प्रोजेक्टर का ख्याल आया और प्रोजेक्टर स्लाइड शो का भी शुभारम्भ किया।

बॉम्बे जैसे शहर में एक तो नया ज्ञान होने के कारण दूसरा ना कोई गीत–संगीत का कनरस, ना ही कोई किस्सा कहानी लोगों में कैसे आकर्षण पैदा किया जा सकता है? इसके लिए भाई साहब ने न सिर्फ डांस–ड्रामा लिखा वरन उसके निर्माता–निर्देशक बन ऊषा बहन द्वारा प्ले भी करवाया। ऐसे यज्ञ के अनगिनत कार्यों की शुरूवात करने के निमित्त भाई साहब बने और यज्ञ के कार्य को दिन दूनी रात सौ गुनी आगे बढ़ाने के निमित्त बन स्वयं भी आगे बढ़ते रहे। किसी भी चीज को एक दिशा में चलाते जाना बड़ी बात नहीं, पर उसमें नवीनता ईजाद करते क्रियान्वय करते रहना बेशक बड़ी बात है।

बहनों का सम्मान– परमात्मा पिता जब धरती पर आते हैं तो उनकी महानता इसी बात से दिखाई देती है कि जिस कार्य को सबने असम्भव मान छोड़ दिया या अबला समझ सताया, सताया भी इतना कि नारी ने स्वयं का पुरूष से अलग अस्तित्व ही मानना छोड़ दिया और आज भी कई देशों में नारी को साधारण सी वस्तु मान अदला–बदली करते या चन्द रूपयों में उसे बेंच देते हैं,कई देशों में तो नारी की दयनीय या दर्दनाक स्थिति सबसे सुनी भी नहीं जा सकती, जिससे नारी में अपना कोई स्वमान तो जैसे रहा ही नहीं। परमसत्ता ने आकर उसे ऊपर उठाया जो सबसे नीचे गिर गयी थी,जिसमें न सिर्फ उसके स्वमान को जाग्रत किया, बल्कि ऐसी उर्जा का संचार कर दिया कि आज वो अनेक पुरूषों का संबल बन उन्हें जीवन जीना सिखा रही है, ठीक इसी प्रकार भाई साहब ने भी न सिर्फ बहनों को आगे रखा, बल्कि उन्हें आगे बढ़ाया भी। हमेशा एकाउन्ट मीटिंग में भाई साहब कहते थे कि सबमें मालिक बनो,खुद एकाउन्ट बनाओ,खुद ही सब बिल चेक करो,कोई बड़ी बात नहीं,करने लगोगे तो सब सीख जाओगे। जब नया–नया कम्प्युटर आया तो सिर्फ कम्प्युटर पर ही एकाउन्ट बनाने की न सिर्फ सजगता दिलाई,बल्कि सबको सरल एकान्उट की ट्रेनिग भी दिलाई, दादी जी से कम्प्युटर कोर्स करने की छुट्टी भी दिलाई,और वकालत करके कम्प्युटर खरीदने के लिए यज्ञ से 25000 हजार रूपये भी दिलवाये। उनकी इसी विशेषता के कारण ही कई बहनें कम एजूकेशन के बावजूद भी निःसंकोच बिना गल्ती के एकाउन्ट बना रही हैं, बल्कि एकाउन्टेंसी का अच्छा ज्ञान होने के कारण मैंनेजमेंट भी सीख लिया है,आज हर बहन को भले ही कोई प्रोफेशनल डिग्री न भी हो पर c.a. तो भाई साहब

ने बना ही दिया है,सेन्टर का हिसाब–किताब कोई भाई करे ये भाई साहब को इतना अच्छा नहीं लगता था,वे सदा ही बहनों को आगे रखना पसंद करते थे।

पाण्डव भवन की कद्र – जगतनियन्ता ने जिस स्थान को सारे विश्व से चुना हो,जहाँ जगतपिता व जगतमाता ने तपस्या की हो वह स्थान अवश्य असाधारण ही होगा,ऐसा स्थान सभी के लिए महातीर्थ ही होगा,हम लोगों के लिए तो क्या हर धर्म वालों के लिए भी उस स्थान में प्रवास अनमोल उपलब्धि होगी,इस कारण हर आत्मा उस स्थान पर आने को लालायित रहती है। शान्तिवन बन जाने के बाद साल में सिर्फ 5 दिन ही पाण्डव भवन में रहने को मिल पाता था। सेन्टर्स की संख्या बढ़ने के कारण पाण्डव भवन में ऑडिट करने के लिए स्थान जब कम पड़ने लगा, तो भाई साहब ने उसको Extend भी कराया,जिससे यहाँ ही ऑडिट हो, और मधुबन का प्रवास मिलता रहे। शान्तिवन में फिर दादी जी के समक्ष सभी से हाथ भी उठवाया, कि ऊपर ही ऑडिट होता रहे,उनका अभिप्राय ये था, कि हर शख्श को उसका फायदा मिले,और हर शख्श की नजर में इस स्थान की वैल्यू पता पड़े,और शान्तिवन में भी ऑडिट हो, फिर एक दिन सबको पाण्डव भवन में रहने की अनुमति दिलाने की पूरी कोशिश करते रहे। स्वयं साकार के साथ जो अनुभव किया, अगर हम लोग साकार के साथ का अनुभव नहीं कर पाये तो कम से कम साकार की कर्मभूमि पर कुछ वक्त रहकर ही कुछ अनुभूतियाँ कर लें,साकार के अनुभव अगर वापस नहीं ला सकते, तो साकार की चरित्रभूमि पर कुछ पल व्यतीत कर, कुछ वायब्रेशन का ही रसास्वादन करें,उनकी ये पुनीत भावना सचमुच दिल को छू लेने वाली थी, जो शायद कोई भी बहन भूल नहीं पायेगी।

यज्ञ के प्रति बेहद समर्पणता–घर गृहस्थ में रहकर न सिर्फ अपने धन को यज्ञ में सफल किया बल्कि अनेकों के धन को भी यज्ञ में सफल कराया और यज्ञ के एक–एक पैसे की न सिर्फ बचत किया, बल्कि हर शख्श को भी सफल करने की प्रबल प्रेरणा देते रहे। संस्था रजिस्टर्ड न होते भी Tax exemption दिलाया,और हरेक को एकाउन्ट मीटिंग में यज्ञ के एक–एक पाई की कीमत बताते थे। अगर किसी भी प्रकार से किसी से कोई गल्ती हो जाती, तो उसकी कितना लिखा पढ़ी की मेहनत करनी पड़ती, रात–दिन लगाकर भी हर संभव कोशिश करते कि संस्था को एक्स्ट्रा खर्च वहन न करना पड़े। लौकिक के अन्दर रहकर भी

यज्ञ के मजबूत आधार स्तम्भ बन, उसकी एक –एक पाई न सिर्फ बचाई बल्कि भगवान का है मान उसकी वैल्यू को समझ यज्ञ में जमा कराई। अपना तन–मन–धन–समय–श्वाँस संकल्प समस्त और सम्पूर्ण सफल किया,बल्कि अपने साथ अनेकों को भी सफल करने के लिए प्रेरणास्रोत भी बनें।

नम्बरवन तक पहुँचाया– दादा विश्वरतन के सहयोगी बन न सिर्फ पूरे यज्ञ के ऑडिट की जिम्मेवारी अपने कन्धों पर लिया, बल्कि एक पूरा एकाउन्ट्स ऑफिस एक्यूरेट एवं पंक्चुअल बना कर दिया, जिसमें इतने अथक समर्पित सेवाधारी रखे, कि बिना किसी थैंक्स के अपनी अथक सेवाएं करते रहते हैं। उम्र के चौथे दौर में भी आनन्द दादा रात को कई बार डेढ़ बजे तक भी बिना किसी पर एहसान जताए स्वेच्छा से सेवाएं देते हैं। हमें प्रायः यही देखने में आता है कि जैसा हेड होता है उनका अनुसरण करने वाले भी वैसे ही बनते जाते हैं। हमने जबसे ऑडिट कराना शुरू किया, तब से लेकर आज तक हर ऑडिटर की निःस्वार्थ सेवाएं देखी हैं,छोटे–छोटे भाई भी रात में भी अकेले ऑफिस में बैठकर कुछ गड़बड़ी के कारण, दूसरे शहर के कम्प्युटर को ऑपरेट करते,न उस बहन को देखा कि उससे कोई स्वार्थ हो,यह समर्पणता ऐसे ही तो नहीं आई होगी ! जरूर इंचार्ज की ऐसी ट्रेनिग रही होगी । साधारण सी बहनों को इतना बारीकी कार्य करने में कोई गल्ती होना सवाभाविक होता था, तो कभी किसी ऑडीटर ने कोई नाराजगी नही जाहिर किया, बल्कि कई – कई बार पूँछने पर भी विनम्रता के साथ गाइड किया। आज इतने सेवाकेन्द्र बड़े–बड़े रिट्रीट सेन्टर के इतने विशाल यज्ञ का एकाउन्ट इतनी सहजता से Neat & clean रहता है कि गवर्मेंट भी कहती है कि सबसे साफ–सुथरा एकाउन्ट ब्रह्माकुमारीज का है।

यज्ञ के प्रति ईमानदारी – जब तक हम ऑडिट कराने गये नहीं, तब तक हमें भी भाई साहब से बेहद डर लगता था और न भी हो तो लोगों को देखकर घबराहट पैदा हो जाये,जैसे आजकल के मॉ–बाप ही बच्चों के एक्जाम के समय कहते हैं कि कल तुम्हारा पेपर है तुम्हें कोई टेन्शन नही है? इसी तरह कई बार हमें भी कई लोग बोलते थे कि भाई साहब के यहॉ से पास हो गये टेन्शन समाप्त,और अगर कहीं कोई गल्ती हो गयी हो, तब तो कहते थे, अब तो तुम्हें भगवान बचाये,भाई साहब के पास जाने से पहले कई लोग कहते, अब तुम्हारी खैर नहीं,इस बात के लिए तो तुम्हें भगवान भी नहीं बचा सकता, परन्तु मुझे बड़ा आश्चर्य लगता कि लोग ऐसी धारणायें किसी के बारे में क्यों बना लेते हैं? हम लोगों के पास भी काफी बड़ा सेन्टर बनाया गया,पर एक बार भी डॉट नहीं खायी,अगर कोई बात समझ में नहीं आई, तो उन्होंने दुबारा भी बताया पर डॉटा तो नहीं। हॉ एक बार हमारे ही सामने किसी सीनियर को काफी तेज आवाज में बात की थी, जिसे कोई भी डॉट मान सकता है,लेकिन उसने जो किया था वो सचमुच नियम नहीं था, यज्ञ का एक बड़ा नुकसान था और ये उन्होंने जानते हुए भी कर लिया था,जो नहीं करना चाहिए था,पर भाई साहब ने सच बोलने वालों को शायद ही कभी भी तेज आवाज में बात की होगी ! हमेशा दो टूक बात वही करता है जो निःस्वार्थ एवं सत्य पथ का राही हो,हम यह नहीं कह रहे हैं कि भाई साहब को

कभी गुस्सा नहीं आता था,पर हमने कभी उनसे डॉट नही खाई,बल्कि सेन्टर बनने पर हमने उनका एहसान जताकर कृतज्ञता व्यक्त करते हुए Thanks बोला तो उन्होंने बड़ी विनम्रता के साथ कहा, ये तो मेरा फर्ज था और फिर पूँछा कि सेन्टर का नाम क्या रखा है? हमने कहा भाई साहब अभी तो उद्घाटन ही नहीं हुआ है,इसीलिए नाम भी नहीं रखा है तो हँसी में कहा तुम्हारी दीदी (मोहिनी दीदी)तो ध्यान में जाती है,उनसे कहो बाबा से पूँछ कर नाम बतायें,आजकल तो बच्चा पैदा भी नही होता और नाम पहले ही सोच लिया जाता है। भाई साहब सत्य के अनुगामी बने, किसी के भले, भले न बन पाये,और किसी व्यक्ति विशेष के भले बनना उनका Aim कभी रहा भी नहीं, इसलिए अगर कोई थोड़ा भी इधर-उधर या काम चलाने की बात करता था, तो भाई साहब को कतई पसंद नहीं था। सत्य बोलने वाला अक्सर लोगों का भला नहीं बन पाता है,यज्ञ की भलाई व श्रीमत पर चलने के कारण दुनियावी भलमनसाहत बहुत पीछे छूट जाती है।

प्रथम पुरूष से वकालत – दुनिया के लोग गुरू से भी बात को दुबारा पूँछने की हिम्मत नहीं कर पाते,बात का जवाब देना तो दूर। 8 वर्ष भाई साहब अपनी मॉ के गुरू के रूप में ब्रह्मा बाबा से मिलते रहे,और उनकी सेवा सौभाग्य समझ करते रहे। बाबा की सेवा के लिए हर संभव आवश्यकता अनुसार व्यवस्था भी करते थे,उसको वे बड़ी खुशी व दिल से करते थे,लेकिन उनकी कोई भी बात को जल्दी स्वीकार नहीं करते,जबकि वह खुद भी पाण्डुरंग शास्त्री के एक शिष्य के रूप शिक्षा ले रहे थे,लेकिन बाबा भी उनकी किसी भी बात को जिज्ञासा मान यथार्थ जवाब दे सन्तुष्ट करते रहे,और जब 1961 में भाई साहब ने बाबा को पहचान पिता के रूप में स्वीकार किया,उसके बाद भी भाई साहब बाबा से बेहिचक बात करते थे,बाबा की बात को 10 तरीके से पूँछते थे उनके पूँछने का आशय किसी भी बात को पूर्णरूपेण समझना था,उनके पास विद्वता के साथ विवेक भी अति श्रेष्ठ था, जिससे वह बाबा से हर बात निःसंकोच पूँछ लिया करते थे,इसका एक कारण यह भी था कि वे बाबा को बड़े ह्रदय से प्रेम करते थे,हजूर की हजूरी में हर पल वे हाजिरी में थे। ब्रह्मा बाबा को पिता के रूप में स्वीकार करने के बाद जब वे पहली बार मधुबन आये तो गेट पर उन्हें सन्तरी दादी मिली तो भाई साहब ने उनसे पूँछा कि बाबा कहाँ है तो दादी ने कहा बाबा काफी देर से क्रिकेट खेल रहे हैं,बच्चे ध्यान भी नहीं रखते, कि बाबा बूढ़ा है बाबा थक गये होंगें! उसे भी आराम चाहिए,देखो कब से बाबा बॉलिंग कर रहे हैं, तो रमेश भाई जी ने कहा मैं जाता हूँ और अभी बाबा से बॉल लेता हूँ, तब सन्तरी दादी ने कहा वो किसी को बॉल नहीं देते,आपके पहले कितने लोगों ने ट्राई किया है,तब भाई साहब ने कहा कि दादी आप विश्वाश रखिये मैं वकील भी हूँ, तो मैं बाबा के साथ थोड़ी सी वकालत भी कर लूँगा,इस प्रकार से भाई साहब

ने बाबा के साथ थोड़ी वकालत भी कर ली,बाबा से जाकर बॉल देने के लिए कहा, तो बाबा ने कहा कि मैं बॉलिंग करूंगा मैं बॉल नहीं दूँगा,तब उन्होंने कहा, कि बाबा आपको क्रिकेट नियम प्रमाण ही खेलना चाहिए,आप तो क्रिकेट के कोई नियम ही पालन नहीं करते,तब बाबा ने कहा कि नियम क्या है? भाई साहब ने कहा कि एक बॉलर भारत के अन्दर 6 बॉल और ऑस्ट्रेलिया में 8 बॉल फेंक कर दूसरे से चेन्ज करता है, फिर दूसरा बॉलर आता है वह बॉलिंग करता है, पर आप तो आधे घन्टे से बॉलिंग कर रहे हैं,आपने क्रिकेट के तो सारे नियम ही तोड़ दिये,तो बाबा ने कहा अच्छा ऐसा होता है! अच्छा तो फिर मैं क्या करूँ बाबा ने कहा, भाई साहब ने कहा कि आपको फील्डिंग करनी चाहिए,तो बाबा ने कहा मुझे कहाँ करनी चाहिए? तब भाई साहब ने कहा कि कैप्टन या बॉलर जो होता है वो फील्डर को जहाँ खड़ा करना चाहे,तब बाबा ने कहा मैं कहाँ खड़ा हूँ? भाई साहब ने बाबा को एक स्थान पर खड़ा किया,और भाई साहब ने बॉल लेकर बॉलिंग की और उस बहन ने जैसे ही बैट लगाया बॉल सीधे बाबा
की ओर गयी और बाबा ने अपनी धोती को ऊपर उठाकर उससे बॉल पकड़ लिया और इस तरह पहली ही गेंद पर भाई साहब ने विकेट लिया जिसे बाबा ने कैच किया।

अद्‌भुत मेधा के धनी – अपने ही एक लेख में उन्होंने लिखा था कि ज्ञान में आने के पहले करीब 10000 किताबें पढ़ चुके थे,उन्होंने किताबों का पढ़कर डाल नहीं दिया था बल्कि उनका अध्ययन किया था, जिसका प्रभाव उनके आर्टीकल्स में साफ दिखाई देता था,जिस प्रकार जगदीश भाई जी के लेखों में अन्य किसी की बात कही तो उनका रेफरेन्स दिया रहता था,आपके लेखों में भी पढ़ी हुई किताबों के कुछ उदाहरण दिया होता, तो उसका रेफरेन्स भी दिया रहता था यह एक प्रकार से ईमानदारी थी,ऐसा न करना जगदीश भाई जी साहित्यक चोरी मानते थे,दूसरा वे किताबें स्मृति पटल पर हूबहू छपी हुई थी। भाई साहब न सिर्फ किताबें पढ़ने के शौकीन थे बल्कि नवीनतम चीजें उनकी नजरों से बच नहीं पाती थी। जब DVD Player आया तो सभी टीचर्स को उसकी विशेषतायें बताकर उसकी उपयोगिता समझा यूज करने के लिए प्रेरित किया। हर वर्ष का बजट आते ही उन्हें पूरा याद हो जाता था,न सिर्फ बजट, बल्कि उन्हें अपना हर आर्टीकल्स भी याद रहता था जिसको वो कई बार क्लास में पूरा–पूरा सुना भी देते थे,मेधा के धनी हों भी क्यों न? कई बार हमने उनके क्लास में ही अपनी माता जी का उदाहरण देते हुए सुना था कि 60 वर्ष की आयु में उन्होंने सिन्धी भाषा सीखी,क्योंकि वह कहती थी कि मैं अपने हाथ से अपने दिल की बात बाबा को लिखूँ और बाबा जो पत्र लिखे, वो और कोई क्यों पढ़े? मैं स्वयं बाबा की बात पढ़ सकूँ,इसलिए इतनी उम्र में बेहिचक सिन्धी सीखी,तो नवीनता और सीखने के संस्कार तो जैसे उन्हें विरासत में

मिले हों।पूरे डिपार्टमेन्ट को ही नवीनतम उपकरणों से सजा दिया था। जब एकाउन्ट मेनुअल होता था तो भी भाई साहब की नजर वहीं पड़ती थी जहाँ गल्ती होती थी, जैसे जगदीश भाई जी के लिए अधिकतर लोगों का कहना था कि जैसे हर सबजेक्ट में PHD की हो, इतनी बारीकी से हर चीज को पकड़ते थे,इसी प्रकार रमेश भाई जी को भी हर बात की बहुत गहरी समझ थी,किसी भी सबजेक्ट पर वह काफी अच्छा व लम्बा बोल सकते थे,एक बार एक विदेश के क्लास की बात बताई थी कि सारी रात एक ही क्लास कराई थी और किसी के उठकर कर जाने की बात तो छोड़ो नींद में उबासी तक भी नहीं ली थी।उनका क्लास रूचिकर के साथ काफी उपयोगी भी होता था। प्रभावशाली प्रवचन के दो मुख्य आधार होते हैं एक वक्ता के जेहन में प्रवचन की तासीर रक्त बन धमनियों में बह रही हो,दूसरा विवेक खुदाई इनायत हो,भाई साहब के साथ ये दोनों बातें थी,उनका मुरली रिवीजन कराना एक मुरली का रिवीजन नहीं होता था पूरे ज्ञान का रिवीजन हो जाता था,उनके मुरली रिवीजन का हर बी.के. को इन्तजार रहता था।अद्‌भुत मेधा के धनी होने के कारण उनके स्मृति के कैनवास में हर बात ऐसी प्रिन्ट रहती थी जैसे कि कल की ही बात हो।

बेहद सेवाओं के अग्रदूत – विश्व कल्याण के कार्य में विश्व परिवर्तन के लिए विदेश की सेवाओं की शुरूवात में विश्वकल्याणकारी जगतनियन्ता ने उन्हें स्वयं slect किया था, लेकिन बहुत सारे विशाल कार्यो की शुरूवात विशाल बुद्धि से भाई साहब ने भी किया या बाबा ने उन्हें यथार्थ पात्र समझ कर निमित्त बनाया,जैसे Indias No.One Solar Plant जो भारत में अभी किसी के ख्याल से भी परे रहा था, न सिर्फ वह इस प्लान्ट के अग्रणी रहे, बल्कि यज्ञ के हर शाखा को भी सहयोगी बना, इस कार्य को अतिशीघ्र संपंन कराने का भगीरथ प्रयास भी किया,इसमें निमित्त बनें भाइयों की न सिर्फ वह तहे दिल से प्रशंशा करते थे बल्कि अपने मुरली रिवीजन क्लास के बीच में बुलाकर समस्त ब्राह्मण परिवार के सामने उनकी सेवाओं को सुनवाकर, उन्हें एप्रीसियेट कर उनके कार्य करने की उमंग में उत्साह की उर्जा को जैसे और तीव्रता प्रदान कर देते हों,आज ये विशाल प्लान्ट अपनी सेवाओं के लिए तैयार है जो भाई साहब भी वतन से देखकर बड़े ही सन्तुष्ट होकर, बाबा को आभार के साथ, निमित्त बनने वालों पर गर्व करके खुश हो रहे होगें। PMTV बाँधेलियों के लिए तो पवनपुत्र और,व्यस्ततम् जिन्दगी वालों में संजीवनी बन बहार की खुशियाँ बिखेरता आया,पर चैनल को सारी सामाग्री उपलब्ध कराता है गॉडली स्टूडियो,जिसकी पटकथा भाई साहब ने लिखी और उसके सूत्रधार बन इतने कम समय में बुलन्दियों के आकाश पर पहुँचा दिया, हाँ इसके पीछे अनेक कर्मठ कियाशील समर्पित लोगों की अथक सेवाएं भी हैं उनको भी नजरन्दाज नहीं किया सकता हैं, लेकिन मोतियों को एक साथ पिरोने वाले तो बेजोड़ धागे

का काम तो भाई साहब ने ही किया है,इस यूनिक एवं बेहद सेवा के लिए तो सारा ब्राह्मण परिवार भी कृतघ्न रहेगा, कि घर बैठे ब्राह्मण जीवन में हर चीज की समझ मिल जाती है।

साहित्य के सिपहसालार – कार्य की व्यस्तता,शारीरिक व्याधियों का संग्राम,कार्यक्रमों की भरमार,समय का अभाव लेकिन ज्ञानामृत के लिए बिना नागा उपयोगी लेख वे अवश्य लिख लेते थे,कई बार हमारे जैसे व्यक्ति के लिए तो जैसे असम्भव ही होगा, पर भाई साहब ये कैसे सम्भव कर लेते थे, यह सदा हमारी जिज्ञासा का विषय रहा। कोई एक टॉपिक पर लेख कई लोग लिख सकते हैं पर हर टॉपिक्स पर एक पूरी सीरीज निकाल देना, वो भी किताब की तरह, वाकई कमाल है,हर किसी के लिए ये सम्भव नहीं,चाहे वो सतयुग से रिलेटेड हो या पवित्र धन के बारे में हो या फिर दैवी संविधान के बारे में हो। आध्यात्म के पुरोधा तो वे थे ही, पर उन्हें साहित्य का भी पुरोधा निःसंकोच कहा जा सकता है।

परमात्म पात्रता के अधिकारी – वैसे तो ज्ञान में परमात्मा से भी फरियाद नहीं करनी पड़ती बिना माँगे ही आशुतोष प्रसन्न हो भरपूर कर देते हैं (भक्ति में लोग कहते हैं कि भगवान छप्पर फाड़ कर देते हैं पर करते तो सदा फरियाद ही रहते हैं) लेकिन भाई साहब तो भगवान को ही बड़े अधिकार से बुला लेते थे, ये अधिकार उनका आज्ञाकारी बच्चे के रूप में हुज्जत का था, जो अपने सारे अधिकार बाबा को ही दे रखे थे,तो बाबा भी उनकी राज भरी आश को पूर्ण करने आ जाते थे, हालांकि यज्ञ के कुछ जरूरी कार्य के समय ही बाबा से आने के लिए भाई साहब का आग्रह होता था,हो सकता यज्ञ में और भी कोई भी बाबा को आने के लिए अनुरोध करता हो और बाबा आते भी होंगें पर हमें ज्ञात नहीं,हाँ जगदीश भाई जी के आने पर कई बार बाबा सबको बाहर भेज देते थे बाबा कहते थे कि जब जगदीश बच्चा आता है तो शिवबाबा मेरे में आता है क्योंकि शिवबाबा को यज्ञ के कई कार्य कुछ दिशा–निर्देश आदि देने होते थे,पर रमेश भाई जी जरूरी बात के साथ अपना प्रेममयी अधिकार भी रखते थे,क्या वन्डरफुल आत्मा थी कि परमात्मा को भी अपने स्नेहपॉश में बॉध लेती थी ।

प्रेजेन्स ऑफ मॉइन्ड लाजवाब– कई बार साकार बाबा को भी बहुत ही सुंदर उत्तर तुरन्त देते ही थे पर एक बार अव्यक्त बापदादा से जब भाई साहब मिल रहे थे तो बाबा ने कोई इच्छा पूँछी तो भाई साहब ने कहा कि अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति करने की इच्छा है तब बाबा ने कहा कि बच्चा बहतु ही होशियार है।

ऐसी महान विभूति,पुनीत आत्मा,यज्ञ के कर्मठ क्रियाशील मजबूत आधार स्तम्भ,सत्य की अद्वितीय हस्ती,विद्वता की पराकाष्ठा से परिपूर्ण, साकार बाप के अतिसय प्रिय, अव्यक्त बाप का नाज, अपने आपमें एवं सारे विश्व में बेमिसाल की एक मात्र मिसाल,बुद्धिवानों की

बुद्धि के चतुर सुजान चात्रक, नवीनता के पर्याय, यज्ञ के आधार स्तम्भ, हर सवाल का जवाब, अटूट निश्चय के मजबूत डोर, वकालत के सम्राट, कला के पारखी, आध्यात्मिकता की तह के अन्वेषक, एकाउन्ट के सफल प्रशिक्षक,हर सेवाकेन्द्र की सफलता के प्रेरक, मुरली की गहनता के पारखी, युगलों के सिरमौर,सफलता के शिल्पी, आदरणीय भाई साहब न सिर्फ यज्ञ की बुलन्दी में आपका अनमोल योगदान रहा बल्कि हम सबको भी यहॉं तक पहुँचाने में आपका सहयोग सदैव ही अविस्मरणीय रहेगा,आपको अन्तस की गहराई से दिल की दुआएं एवं आभार के साथ मेरा कोटि–कोटि नमन।

ब्र0 कु0 सुमन
जानकीपुरम लखनऊ